(3)

"माइकेलेन्जेलो - 1475 — 1564"

माइकेल एंजेलो रिनासाँ की द्वितीय महान उपलब्धि माना जाता है। माइकेलेन्जेलो भी ल्योनार्डो के समान मेधावी, प्रतिभाशाली और विश्व की चन्द इनी-गिनी महान विभूतियों में से था जिन्होंने अपने मौलिक योगदान से कला के स्वरूप को निखारा। वह मूलत: एक दक्ष मूर्तिकार था।

इसका जन्म 1475 में फ्लोरेन्स राज्य के कैपरीज नामक स्थान पर हुआ था। इसके पिता रेजीडेन्ट न्यायधीश थे। इसके लालन-पालन में एक पत्थर तोड़ने वाली स्त्री का योगदान है। और इसी से प्रभावित होकर जब यह लगभग 11-12 वर्ष का था तब इसने संगमरमर पत्थर में हिरन का एक पैनल बनाया। इस पैनल को मैडिसी ने देखा वह इससे काफी प्रभावित हुआ और उसे अपने साथ महल ले गया।

इसकी एक विशेष विशेषता थी कि यह दूरदर्शी था और भविष्य को पहले ही जान लेता था। इसका उदाहरण है। कि जब मैडिसी की मृत्यु हुई और उसका अयोग्य बेटा गद्दी पर बैठता था तो यह पहले से ही वहाँ से जा चुका था क्योंकि गद्दी पर बैठते ही उसने सभी योग्य व्यक्तियों को देश निकाला दे दिया था।

माइकेल की रुचि मूर्तिशिल्प में ही थी लेकिन इसे राजनैतिक कारणवश चित्रकार बनना पड़ा और चित्रकारी की आरम्भिक शिक्षा इसने "डोमेनिको घिरलैण्डियो" की चित्रशाला में सीखी इसलिये माइकेल के चित्रशाला चित्र बहुत कम है। इसकी दो कृतियाँ "मैडोना और नवजात ईसा" तथा "सेन्ट जॉन बापटिस्ट और एन्जिल" है। इसके चित्रों की मानव आकृतियां मूर्ति की भाँति दर्शायी गई है। (क्योंकि मूलत: मूर्तिकार) शारीरिक रचना पुष्ट है। आकृतियां सौष्ठव तथा सौन्दर्य युक्त है। कपड़ों के अंकन में जाइंईअंका है।

उस समय चित्रण में नर-नारी के नग्न रूपों में संसार का समस्त सौन्दर्य केन्द्रित था। इसने एक नग्न मानव आकृतियों की श्रृंखला 1530 में रेखांकित किया जो "आरचर्स शूटिंग एट ए हर्मस" के नाम से विख्यात है। इस श्रृंखला में भागते, चलते, फिरते, नाचते, लड़ाई की मुद्रा में और भी अनेक मुद्राओं में मानव आकृतियों को जो रेखांकित किया गया है। वह अद्वितीय है। सभी मानव आकृतियां हृष्ट-पुष्ट है। शरीर माँस पेशियों वाले शारीरिक कठिन परिश्रमी से दिखाई पड़ते है।

माइकेल का एक अन्य रेखाचित्र "सेटिड मेल न्यूड" नामक

शीर्षक से विख्यात है। यह मॉड्ल द्वारा अध्ययन पश्चात रेखांकित की गई थी आकृति इतनी सुन्दर बनी कि आगे चलकर माइकेल द्वारा चित्रित "सिस्टाइन चैपल" की छत की शोभा बनी। इसके विषय में कहा जाता है कि "ए स्कल्पटर हू पेन्टेड"

1498 में माइकेल रोम चला गया और वहाँ उसने अपनी प्रथम महत्त्वपूर्ण कृति निर्मित की जिसके सेन्ट पीटर के चर्च के लिये "पियटा" की प्रतिमायें हैं। ये मूर्तियां बहुत ही सवार कर बताई गई हैं और ये मूर्तियां माइकेल के शरीर शास्त्र व वस्त्रों की सिकुड़नों के पूर्ण ज्ञान को प्रस्तुत करती हैं। पियटा की इस प्रतिमा में एक नारी की गोद में पूर्ण विकसित पुरुष की समस्या को सुलझाया है। इस कृति से माइकेल का यश और भी बढ़ गया। इसके बाद एक अन्य कृति "हेन्ड ऑफ ए मैन" की रचना की

मूर्तिशिल्प में अधिक रुच को देखकर फ्लोरेन्स के शासक मैडिसी ने इसे अपने गार्डन स्कूल ऑफ स्कल्पचर में भेजा। माइकेल मूर्तिकार था इसलिए इसके विषय-वस्तु की आकृतियाँ मूर्तिप्रभाव से युक्त है। (चाहे वह चित्र हो या मूर्ति) उनका गठन व संयोजन बलिष्ठ है। इसकी स्त्री आकृतियां भी बलिष्ठ व पुरुषभाव लिए हुये है। इनकी मांस पेशियों में खिंचाव व तनाव है। उनमें आवेश, क्रोध, चिन्ता, तथा भय आदि के भाव प्रदर्शित होते हैं। ये ठोस बलिष्ठ आकृतियाँ अपनी आंखो की भंगिमाओं से कुछ न कुछ कहती प्रतीत होती है। शरीर की नापतोल शास्त्रीय सिद्धान्तो पर आधारित है। यही से यर्थाथवादीता की पराकाष्ठा प्रदर्शित होती है। और इसी शैली के बार-२-प्रयोग में आने से इसे रीतिवाद की संज्ञा दी गई है। माइकेल के "पियटा" व "डेविड" मूर्तिशिल्प के अद्वितीय उदाहरण है। इसके बाद इसने "ब्रूजेज मैडोना" व "स्नानार्थी" चित्र अंकित किये। और इन्ही शैली में आगे चलकर सिस्टाइन चैपल की छत में सृष्टि सम्बन्धी चित्रों का निर्माण किया गया जो विश्व विख्यात है।